



विवाह एवं दाम्पत्य रिपोर्ट

आपके विवाह, जीवनसाथी व दाम्पत्य सुख का विश्लेषण

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

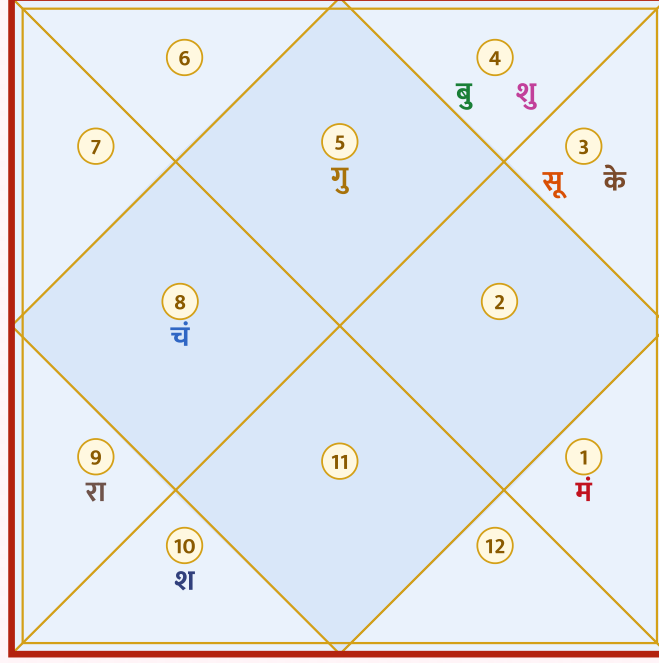
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



विवाह-कुंडली परिचय

अध्याय 1

विवाह-कुंडली परिचय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में विवाह का संसार देखें तो एक बात तुरंत उभरती है — **सप्तम भाव के स्वामी शनि अपनी स्वराशि मकर में बैठकर अत्यंत बलवान हैं, पर दशा-गणना व ग्रह-स्थिति मिलाकर देखें तो विवाह का मार्ग सीधा नहीं, संयम और धैर्य से बना हुआ है।** यह कुंडली बताती है कि विवाह में गहराई होगी, शीघ्रता नहीं।

सप्तम भाव — विवाह का घर

आपका सप्तम भाव कुम्भ राशि में है। **सप्तमेश शनि षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं** — यह एक महत्वपूर्ण स्थिति है। षष्ठ भाव रोग, शत्रु और ऋण का घर है; सप्तमेश का यहाँ बैठना बताता है कि जीवनसाथी के विषय में कुछ उलझन, देरी या परीक्षा आएगी। पर शनि स्वराशि में हैं — इसलिए अंततः वे अपना फल देंगे, बस अपने तरीके और अपने समय पर। शनि का वक्री होना यह भी कहता है कि विवाह से जुड़े निर्णय बार-बार पलटते हैं, या जो रिश्ता सामने आता है वह पहली नज़र में पूरा नहीं लगता — पर धैर्य से आगे बढ़ें तो बात बनती है।

दृष्टि का पक्ष: गुरु आपके लग्न से सप्तम भाव को देख रहे हैं — यह शुभ संकेत है। गुरु की दृष्टि विवाह में धर्म, विश्वास और स्थायित्व लाती है। केतु भी सप्तम भाव को देख रहे हैं, जो कुछ असमंजस या अपेक्षाओं की उलझन दे सकते हैं, पर गुरु की उपस्थिति उसे संतुलित करती है।

शुक्र — प्रेम और साथी का कारक

विवाह के दूसरे मुख्य कारक शुक्र की स्थिति गहरे ध्यान से देखें। **शुक्र द्वादश भाव में कर्क राशि में हैं — शत्रु राशि में, और साथ ही अस्त भी हैं।** षड्बल में शुक्र का बल 6.11 रूप — पर्याप्त है, किंतु अवस्था मृत है। इसका अर्थ है कि प्रेम की भावना भीतर गहरी है, पर उसे व्यक्त करना, उसे संसार के सामने लाना कठिन लगता है। द्वादश भाव एकांत और अंतरंगता का घर है — आपका प्रेम शायद मन में अधिक जीता है, बाहर कम।

नवांश (D9) में शुक्र सिंह राशि के द्वादश भाव में हैं — यह फिर वही बात कहता है। **विवाह की गहराई होगी, पर शुरुआत में किसी से पूरी तरह खुलना कठिन लगेगा।**

मंगल दोष — सच क्या है

मंगल नवम भाव में स्वराशि मेष में हैं — बलवान, पर अवस्था मृत। **मंगल द्वादश, तृतीय और चतुर्थ भाव को देख रहे हैं — सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि नहीं है।** परंपरागत मंगल-दोष की गणना में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में मंगल हो तो दोष माना जाता है। नवम भाव में मंगल होने पर कुछ परंपराएँ दोष मानती हैं, कुछ नहीं। इसलिए **इस विषय में अति-भय आवश्यक नहीं** — विवाह में साथी का स्वभाव तेज़ या स्वतंत्र हो सकता है, पर यह जीवन तोड़ने वाला नहीं।

मुख्य बातें

- सप्तमेश शनि स्वराशि में बलवान हैं — विवाह होगा, पर शनि की शर्त पर: धैर्य और परिपक्वता से।
- शुक्र अस्त व मृत अवस्था में — प्रेम गहरा है, पर खुलकर सामने लाना कठिन लगता है।
- गुरु की सप्तम दृष्टि — विवाह में भरोसा, गहराई और धर्म-भाव होगा।
- मंगल दोष को लेकर अत्यधिक चिंता न करें — नवम भाव का मंगल सब परंपराओं में दोष नहीं देता।
- नवांश में शुक्र कमजोर भाव में — विवाह का सुख धीरे-धीरे खिलेगा, पहले दिन से नहीं।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

जायाधीशः शुभैर्युक्तो दृष्टो वा बलसंयुतः ।
तदा जातो धनी मानी सुखसौभाग्यसंयुतः ॥

सातवें भाव का स्वामी शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो और बलवान हो — तो जातक धनी, मान पाने वाला तथा सुख-सौभाग्य से युक्त होता है।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १८



सप्तम भाव व जीवनसाथी का स्वरूप

अ ध्या य 2

सप्तम भाव व जीवनसाथी का स्वरूप

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली का सप्तम भाव कुम्भ राशि में है और उसके स्वामी शनि स्वराशि मकर में — छठे भाव में बैठकर वक्री हैं। इसका सीधा अर्थ यह है कि **आपके जीवनसाथी का स्वरूप सामान्य नहीं होगा — गहरा, थोड़ा जटिल और धीरे-धीरे खुलने वाला होगा।** विवाह एक बड़े निर्णय की तरह आएगा, हल्केपन की तरह नहीं।

कुम्भ राशि का सप्तम भाव — साथी कैसा होगा

कुम्भ राशि स्वयं में बुद्धिमान, स्वतंत्र-विचार वाली और थोड़ी अपरंपरागत राशि है। इस राशि के सप्तम भाव से यह संकेत मिलता है कि **आपका जीवनसाथी एक सोचने-समझने वाला, अपने विचारों में स्पष्ट और थोड़ा अलग किस्म का व्यक्ति होगा।** वह भीड़ के साथ नहीं, अपनी धारा से चलने वाला होगा।

कुम्भ राशि शनि की है — यह भाव बताता है कि रिश्ते में तुरंत घनिष्ठता नहीं आएगी। पहले दोस्ती, फिर समझ, और उसके बाद विश्वास — यही क्रम रहेगा। आपके साथी में एक बौद्धिक गहराई होगी और वे भावनाओं को खुलकर नहीं, धीरे-धीरे व्यक्त करेंगे।

सप्तमेश शनि — भाव ६ में, स्वराशि में, वक्री

यह सबसे महत्वपूर्ण बिंदु है। सप्तम के स्वामी शनि छठे भाव में अपनी ही राशि मकर में वक्री बैठे हैं।

अच्छी बात यह है कि शनि स्वराशि में हैं — इससे वे बलवान हैं। इसका अर्थ है कि विवाह के बाद रिश्ता टिकाऊ रहेगा, भले ही शुरुआत में कुछ देर लगे। जो भी संबंध बनेगा, वह सतही नहीं होगा।

ध्यान देने वाली बात यह है कि शनि छठे भाव में हैं — यह भाव संघर्ष, सेवा और ऋण का है। इससे यह संकेत मिलता है कि विवाह-संबंध में कभी-कभी जिम्मेदारियों का बोझ अधिक महसूस हो सकता है। आप में से एक या दोनों को रिश्ते को "निभाने" की भावना से चलाना पड़ सकता है।

वक्री शनि यह भी कहते हैं कि **विवाह सीधी राह से नहीं आएगा।** कोई बाधा, देरी, या पहले की कोई अटकन — इनके बाद विवाह की बात पक्की होगी। यह देरी दोष नहीं, यह आपकी कुंडली की अपनी प्रकृति है।

षड्बल में शनि का बल 7.5 रूप है (न्यूनतम 5 से ऊपर) — बल पर्याप्त है, पर अवस्था कुमार है, यानी आधा फल। इसलिए शनि जो देंगे वह देर से देंगे, पर देंगे अवश्य।

गुरु की दृष्टि — सप्तम भाव पर

आपके लग्न में बैठे गुरु की दृष्टि सीधे सप्तम भाव पर पड़ रही है — और यह **बहुत शुभ** है। गुरु विवाह के कारक ग्रह भी हैं, और उनकी दृष्टि सप्तम पर होने से विवाह की संभावना बनी रहती है, बाधित नहीं होती।

गुरु यहाँ यह भी कह रहे हैं कि आपका जीवनसाथी किसी न किसी रूप में — व्यवहार में, विचार में या जीवन-दृष्टि में — एक धार्मिक, सात्विक या नैतिक व्यक्ति होगा। वे भले इंसान होंगे।

नवांश (D9) में चंद्र सातवें भाव (मीन राशि) में हैं — यह बताता है कि जीवनसाथी का स्वभाव भावुक, संवेदनशील और परिवार-केंद्रित होगा। वे आपकी भावनाओं को समझने में सक्षम होंगे, भले ही कहने में समय लें।

केतु की दृष्टि भी सप्तम पर पड़ रही है — इसका अर्थ है कि रिश्ते में कभी-कभी एक अजीब-सी दूरी या विरक्ति का अनुभव हो सकता है। यह आवश्यक नहीं कि रिश्ता कमजोर हो, पर दोनों को भावनात्मक जुड़ाव के लिए सचेत प्रयास करना होगा।

विवाह-कारक शुक्र — बारहवें भाव में, अस्त

विवाह के सबसे बड़े कारक शुक्र बारहवें भाव (कर्क राशि) में अस्त हैं — यह एक महत्वपूर्ण बात है। शुक्र का षड्बल 6.11 रूप पर्याप्त है, पर अवस्था मृत है। इसका अर्थ है कि **प्रेम और रोमांस की अभिव्यक्ति आपके लिए सरल नहीं रही होगी**। भावनाएँ भीतर हैं, पर उन्हें बाहर लाना कठिन लगता है।

बारहवाँ भाव एकांत और त्याग का भाव है — शुक्र यहाँ यह भी कहते हैं कि आपने रिश्तों में कुछ त्याग किया है, या रिश्ते किसी न किसी कारण से दूरी में रहे हैं। विदेश-संबंध या दूर रहने वाले साथी की संभावना भी यहाँ से दिखती है।

अच्छी बात यह है कि अस्त शुक्र बारहवें भाव में होने से **दाम्पत्य जीवन में एकांत में एक गहरी प्रीति होगी** — जो बाहर दिखती नहीं, पर भीतर से मज़बूत होगी।

मुख्य बातें

- जीवनसाथी बुद्धिमान, स्वतंत्र-विचार वाले और भावनाओं में गहरे होंगे — पहली मुलाकात में खुलकर नहीं आएँगे
- सप्तमेश शनि स्वराशि में बलवान हैं — विवाह टिकाऊ और जिम्मेदारी-भरा होगा, पर देरी से आएगा
- गुरु की दृष्टि सप्तम पर शुभ फल दे रही है — विवाह की संभावना बनी है, साथी का चरित्र भला होगा
- केतु की दृष्टि से रिश्ते में भावनात्मक जुड़ाव के लिए सचेत प्रयास ज़रूरी रहेगा — दूरी अपने-आप नहीं पाटी जाएगी
- शुक्र अस्त और बारहवें भाव में हैं — प्रेम की अभिव्यक्ति में कठिनाई रही होगी, पर दाम्पत्य में एक शांत, गहरी आत्मीयता बनेगी



विवाह का समय (दशा-गोचर)

अ ध्या य 3

विवाह का समय — दशा और गोचर क्या कहते हैं

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में विवाह का समय देखें तो **अभी की दशा (सूर्य-शनि) संघर्ष वाली है, पर फ़रवरी 2027 के बाद का**

दौर धीरे-धीरे खुलता है — और अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029 के बीच (सूर्य-शुक्र अंतर्दशा) का समय इस कुंडली में विवाह के लिए सबसे अनुकूल संकेत देता है।

सप्तमेश शनि और अभी का दौर

आपका सप्तम भाव कुम्भ राशि में है और इसके स्वामी शनि हैं। शनि अभी अपने ही छठे भाव (मकर राशि, स्वराशि) में बैठे हैं — यानी सप्तमेश छठे भाव (शत्रु, अड़चन, विलंब) में हैं। यह स्थिति विवाह को टालती नहीं, पर **सहज नहीं बनाती** — कुछ न कुछ अड़चन, परिवार की ओर से शर्तें, या ख़ुद का मन न बन पाना।

अभी चल रही अंतर्दशा सूर्य-शनि है, जो **फ़रवरी 2027 तक** रहेगी। सूर्य और शनि स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के विरोधी हैं — सूर्य अहं व स्वतंत्रता का ग्रह, शनि नियम व धैर्य का। इन दोनों की युगल-दशा में रिश्तों में स्पष्टता आने में समय लगता है। **इस अवधि में विवाह की चर्चाएँ हों तो हों, पर जल्दबाज़ी में कोई निर्णय न लें।**

साथ ही गोचर में शनि अभी मीन राशि में वक्री हैं (दिसम्बर 2026 तक वक्री), जो आपके जन्म-लग्न से आठवें भाव में बैठे हैं। आठवाँ भाव छुपी बातों और रुकावटों का है — गोचर-शनि की यह स्थिति बताती है कि अभी का समय चिंतन व तैयारी का है, निर्णय का नहीं।

फ़रवरी से दिसम्बर 2027 — बुध अंतर्दशा में एक नई शुरुआत

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी। बुध आपके द्वादश व एकादश भाव के स्वामी हैं और द्वादश भाव में बैठे हैं — एकांत व आत्म-मंथन की ओर। **यह अवधि विवाह के निर्णय से ज़्यादा संबंध को समझने की होगी।** हाँ, इस दौरान बुध भद्रिका योगिनी (बुध-स्वामी) के साथ भी चल रहे हैं — बातचीत, लेन-देन, रिश्तों में वाणी से सुधार। परिवारों के बीच बातचीत इस दौर में आगे बढ़ सकती है।

दिसम्बर 2027 से सूर्य-केतु की छोटी-सी अवधि आएगी (अप्रैल 2028 तक)। केतु आपके ग्यारहवें भाव में हैं। **यह समय आत्मनिरीक्षण का रहेगा — रिश्ते में भावनात्मक स्पष्टता ज़रूरी होगी।**

अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029 — सूर्य-शुक्र : सबसे अनुकूल खिड़की

यह अवधि इस कुंडली में **विवाह के लिए सबसे संभावित और अनुकूल समय** है।

शुक्र विवाह के नैसर्गिक कारक हैं, और सूर्य-शुक्र अंतर्दशा में विवाह-संबंधी विषयों पर निर्णय स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ते हैं। **गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर पड़ रही है** (जन्म-कुंडली में गुरु लग्न से सप्तम को देख रहे हैं) — यह दाम्पत्य में शुभता व स्थायित्व का बड़ा आधार है।

इस दौर में गोचर में गुरु का आगमन भी देखिए — मई 2025 से कर्क राशि में चल रहे गुरु अक्टूबर 2026 तक वहाँ रहेंगे, फिर सिंह राशि (आपका लग्न) में आएँगे — जो **आपके लग्न पर गुरु का गोचर होगा, यह विवाह के लिए अत्यंत शुभ संकेत है।** लग्न पर गुरु का गोचर जीवन में नई शुरुआत और बड़े निर्णयों का समय होता है।

नवांश (D9) में शुक्र सिंह (बारहवें भाव) में हैं, जो यह संकेत देता है कि **रिश्ते की असली गहराई समय के साथ खुलेगी** — पहली मुलाकात से ज़्यादा, साथ बिताए वक्त से।

मुख्य बातें

- **अभी सूर्य-शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 तक) विवाह के लिए अनुकूल नहीं** — विलंब व अड़चन का समय है, इसमें जल्दबाज़ी न करें
- **फ़रवरी से दिसम्बर 2027** में बातचीत और परिवारों के बीच रिश्ता आगे बढ़ सकता है
- **अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029** — सूर्य-शुक्र अंतर्दशा व लग्न पर गुरु का गोचर — **यह इस कुंडली में विवाह का सबसे अनुकूल कालखंड है;** तब आप लगभग 36 वर्ष के होंगे
- गुरु की सप्तम पर दृष्टि दाम्पत्य में शुभता व गहराई की गारंटी है
- **घबराइए नहीं** — देर है, अंधेर नहीं; शनि जब देता है तो टिकाऊ देता है



दाम्पत्य सामंजस्य व प्रेम

अ ध्या य 4

दाम्पत्य सामंजस्य व प्रेम

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली यह स्पष्ट कहती है कि आपका प्रेम गहरा और सच्चा होगा — पर उसे पाने और सँभालने के लिए भीतर से कुछ काम करना होगा। रिश्ते में तूफ़ान नहीं आएगा, पर शांति भी अपने-आप नहीं मिलेगी — वह कमाना होगी।

प्रेम का स्वभाव — गहरा, पर कहने में कठिन

आपका पंचम भाव धनु राशि में है और इसके स्वामी गुरु लग्न (भाव 1) में बैठे हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, और पूरे षड्बल के साथ। **यह स्थिति बताती है कि आपकी भावनाएँ बहुत गहरी हैं, पर आप उन्हें बाहर कहने में संकोच करते हैं।** प्रेम में आप आदर्शवादी हैं — आप किसी ऐसे साथी की खोज में रहते हैं जिसके साथ केवल आनंद नहीं, एक अर्थपूर्ण जीवन बने।

पंचम भाव पर राहु की दृष्टि है और सूर्य भी इसे देख रहे हैं — इसका अर्थ यह है कि प्रेम में कभी-कभी भ्रम या बेचैनी आ सकती है। कोई

रिश्ता बहुत तेजी से आकर्षित करे, पर भीतर ही भीतर एक असुरक्षा भी बनी रहे। **यह दोष नहीं, एक प्रवृत्ति है जिसे समझकर आगे बढ़ा जा सकता है।**

दाम्पत्य में सामंजस्य — कहाँ घर्षण होगा, कहाँ मेल

सप्तमेश शनि अपनी ही राशि मकर में, षष्ठ भाव में वक्री बैठे हैं। शनि की नैसर्गिक प्रवृत्ति है — दूरी, संयम, और भावनाओं को भीतर दबाकर रखना। दूसरी ओर, आपके लग्न में गुरु बैठे हैं जो खुलापन, उत्साह और उदारता चाहते हैं। **यह दोनों ग्रह एक-दूसरे से बिल्कुल अलग भाषा बोलते हैं — और यही आपके दाम्पत्य की सबसे बड़ी चुनौती है।**

आप भावनात्मक रूप से गर्मजोशी चाहते हैं, पर आपका रिश्ते का ढाँचा (शनि) यह कहता है कि जीवनसाथी व्यावहारिक और ज़िम्मेदार होगा — पर रोमांटिक कम। इसका अर्थ यह नहीं कि रिश्ता ठंडा होगा — बल्कि यह कि **प्रेम यहाँ शब्दों में कम और कर्मों में अधिक दिखेगा।** जो साथी आपके काम आए, खामोशी से खड़ा रहे — वही आपसे सबसे गहरा जुड़ेगा।

गुरु की दृष्टि सप्तम भाव पर पड़ रही है — यह एक बड़ी राहत है। इसका अर्थ है कि चाहे कठिनाई हो, **रिश्ते में एक नैतिक आधार और परस्पर सम्मान बना रहेगा।** टूटन आएगी नहीं, केवल समझ बनाने में समय लगेगा।

चंद्र और शुक्र — मन की परतें

आपका चंद्र वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव में है — नीच अवस्था में, पर बाल अवस्था में। इसका अर्थ यह है कि **भावनाओं को व्यक्त करना आपके लिए सहज नहीं है।** मन भीतर बहुत कुछ महसूस करता है, पर बाहर बहुत कम आता है। जीवनसाथी यदि यह न समझे तो उसे लग सकता है कि आप दूर हैं या उदासीन हैं — जबकि सच इसके बिल्कुल उलटा होता है।

शुक्र — प्रेम और दाम्पत्य सुख का सबसे मुख्य कारक — द्वादश भाव में कर्क राशि में हैं, और अस्त अवस्था में। **यह स्थिति बताती है कि प्रेम की अभिव्यक्ति दबी हुई है।** रिश्ते में जो सुख मिलना चाहिए, वह पूरी तरह व्यक्त होने में अड़चन आती है। पर नवांश (D9) में शुक्र सिंह राशि में हैं — जो यह कहता है कि **जब रिश्ता टिक जाए, तो भीतर का प्रेम धीरे-धीरे प्रकट होने लगता है।** यह बाद में खिलने वाला फूल है, पहले दिन से नहीं।

दाम्पत्य में कलह और उससे बाहर निकलने का रास्ता

शनि षष्ठ भाव में वक्री हैं और उनकी दृष्टि द्वादश पर पड़ रही है — जहाँ बुध और शुक्र पहले से बैठे हैं। **यह योग बताता है कि घर में कभी-कभी अनकहा तनाव जमा होता रहेगा — जो एक दिन किसी छोटी बात पर बाहर आएगा।** इसका उपाय यही है कि बात छोटी रहते ही कर ली जाए, मन में जमने न दी जाए।

हर्ष विपरीत राजयोग आपकी कुंडली में है — षष्ठेश (शनि) दुःस्थान में हैं। इसका एक अर्थ यह भी है कि **घरेलू कठिनाइयाँ आपको तोड़ेंगी नहीं, बल्कि आप दोनों को एक-दूसरे के और करीब लाएँगी।** जितनी बड़ी परीक्षा, उतना गहरा जोड़।

मुख्य बातें

- **प्रेम गहरा है पर अभिव्यक्ति कम** — शुक्र अस्त और चंद्र नीच, दोनों मिलकर यही कहते हैं; इसे पहचानिए और साथी को बताइए।
- **जीवनसाथी का प्रेम कर्म में दिखेगा, शब्दों में कम** — शनि का स्वभाव यही है; उसे स्वीकार करना ही सामंजस्य है।
- **गुरु की दृष्टि सप्तम पर** — रिश्ते में सम्मान और नैतिक आधार बना रहेगा, यही सबसे बड़ी नींव है।
- **अनकहा तनाव जमा न होने दें** — शनि-शुक्र का द्वादश भाव में मेल यही सावधानी माँगता है।
- **फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा** आएगी — तब संवाद और समझ दोनों बेहतर होंगे; यह दाम्पत्य में एक नई शुरुआत का समय होगा।



मंगल दोष व अन्य योग

अ ध्या य 5

मंगल दोष व अन्य योग

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में मंगल की स्थिति को लेकर अक्सर लोग डरते हैं — पर मैं देखती हूँ कि यहाँ तस्वीर जितनी कठिन दिखती है, उतनी है नहीं। **मंगल दोष की बात करें तो हाँ, यह कुंडली में विद्यमान है — पर उसका परिहार भी इसी कुंडली में मौजूद है।**

मंगल दोष — है, पर पूरी कहानी यही नहीं

मंगल दोष तब माना जाता है जब मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में हो। आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव (मेष राशि, स्वराशि) में हैं — इसलिए पारंपरिक मंगल दोष के भाव नहीं बनते।

पर चंद्र कुंडली से देखें तो चित्र बदलता है। चंद्र लग्न वृश्चिक से मंगल छठे भाव में आते हैं — और कुछ शास्त्रीय परंपराओं में चंद्र से छठे मंगल को भी दोष-संकेत माना गया है। साथ ही, **सप्तम भाव के स्वामी शनि पर मंगल की कोई सीधी दृष्टि नहीं है** — इसलिए सप्तम भाव को मंगल की आँच नहीं लग रही। यह राहत की बात है।

निष्कर्ष यह है कि **पूर्ण मंगल दोष नहीं है, पर चंद्र कुंडली से मिश्रित संकेत हैं।** घबराने की नहीं, सतर्क रहने की बात है।

मंगल का असली स्वभाव — शक्ति या उग्रता?

आपके मंगल नवम भाव में स्वराशि मेष में हैं — यह बहुत बड़ी बात है। स्वराशि मंगल बलवान होते हैं और भाग्य भाव में बैठकर एक विशेष ऊर्जा देते हैं। **पर अवस्था मृत है** — अर्थात् बल होने के बावजूद फल देने की क्षमता क्षीण है। इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि आप भीतर से दृढ़ हैं, पर कभी-कभी वह दृढ़ता बाहर ठीक से नहीं आ पाती।

रिश्ते में इसका रूप ऐसे दिखता है — **आप तेज़ हैं, सीधे हैं, जल्दी राय बना लेते हैं** — पर जीवनसाथी को इसे समझने में समय लग सकता है। मंगल की यह ऊर्जा यदि साझेदारी में लगे तो शक्ति बनती है, और यदि टकराव में लगे तो दूरी।

मंगल की दृष्टि द्वादश भाव, तृतीय भाव और चतुर्थ भाव पर पड़ रही है। द्वादश पर दृष्टि का अर्थ है — अंतरंग जीवन और भावनात्मक एकांत में उतार-चढ़ाव; पर चतुर्थ पर दृष्टि यह भी कहती है कि घर-परिवार में आपकी ऊर्जा सक्रिय रहेगी।

गुरु का शुभ प्रभाव — यही सबसे बड़ा परिहार है

आपकी कुंडली में **गुरु लग्न (सिंह राशि) में मित्र राशि में, युवा अवस्था में, पूर्ण बल के साथ** विराजमान हैं — और उनकी दृष्टि सीधे सप्तम भाव पर पड़ रही है। शास्त्र में गुरु की सप्तम दृष्टि को विवाह का सबसे बड़ा रक्षाकवच माना गया है।

इसके अतिरिक्त, **गजकेसरी योग** आपकी कुंडली में सक्रिय है — चंद्र से केंद्र में गुरु। यह योग यश, बुद्धि और दाम्पत्य में सम्मान देने वाला है। **विवाह में गुरु का यह बल मंगल के मिश्रित प्रभाव को काफ़ी हद तक संतुलित कर देता है।**

नवांश (D9) में गुरु अपनी ही राशि कन्या में लग्न में हैं — यह **वर्गोत्तम** स्थिति नहीं, पर कन्या नवांश में गुरु स्वराशि में हैं, जो उनकी दाम्पत्य में शुभता को और दृढ़ करता है।

मुख्य बातें

- **मंगल दोष जन्म-कुंडली के भाव-क्रम से नहीं बनता**, क्योंकि मंगल नवम भाव में हैं; चंद्र कुंडली से मिश्रित संकेत हैं — भय नहीं, सावधानी उचित है।
- मंगल स्वराशि में बलवान हैं पर मृत अवस्था में — **रिश्ते में ऊर्जा है, पर उसे सही दिशा देना ज़रूरी है।**
- **गुरु की सप्तम दृष्टि और गजकेसरी योग — यही इस कुंडली का सबसे बड़ा विवाह-रक्षाकवच है।**
- हर्ष विपरीत राजयोग भी इस कुंडली में है — कठिन परिस्थितियाँ आएँगी पर **परिणाम में अप्रत्याशित लाभ मिलता है।**
- उपाय के रूप में — रोज़ शारीरिक श्रम या व्यायाम से मंगल की ऊर्जा को उचित दिशा दें; और **रिश्ते में सीधापन रखें, पर कठोरता नहीं।** मंगल का सबसे अच्छा उपाय यही है कि उसकी ऊर्जा टकराव में नहीं, निर्माण में लगे।



संभावित चुनौतियाँ व समाधान

अ ध्या य 6

संभावित चुनौतियाँ व समाधान

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में विवाह की राह सुंदर है — पर सपाट नहीं। **कुछ ग्रह-स्थितियाँ ऐसी हैं जो रिश्ते में घर्षण पैदा करती हैं, और उन्हें समझना ही उनका सबसे बड़ा समाधान है।**

शनि की चुप्पी — "कहा नहीं, तो माना नहीं"

आपके सप्तम भाव के स्वामी शनि हैं, जो छोटे भाव में स्वराशि मकर में वक्री बैठे हैं। शनि का स्वभाव है — देर, दूरी और संयम। यही गुण जब रिश्ते में आता है, तो जीवनसाथी को लग सकता है कि **"यह मुझसे खुलकर बात नहीं करते।"**

वक्री शनि की यह चुनौती और गहरी हो जाती है — भावनाएँ भीतर ही रह जाती हैं, बाहर नहीं आतीं। आपकी चंद्र राशि वृश्चिक में नीच की है, जो मन को और अधिक अंतर्मुखी बनाती है। यानी दो तरफ़ से — शनि और चंद्र दोनों — भावनाएँ व्यक्त करने में रुकावट आती है।

समाधान: रोज़ एक छोटी बात — बस इतना — जीवनसाथी से साझा करने का अभ्यास बनाइए। "आज मुझे यह अच्छा लगा" या "यह बात मुझे परेशान कर रही है।" बड़ी बातचीत नहीं चाहिए, निरंतरता चाहिए। शनि अनुशासन से प्रसन्न होते हैं — यह दैनिक अभ्यास ही उनका असली उपाय है।

बुध-शुक्र का द्वादश भाव — भावनाएँ खर्च हो जाती हैं, दिखती नहीं

आपके बुध और शुक्र दोनों बारहवें भाव में कर्क राशि में बैठे हैं। शुक्र अस्त भी हैं — यानी उनका बल बहुत क्षीण है। **शुक्र प्रेम का कारक ग्रह है, और वे न केवल शत्रु राशि में हैं, बल्कि व्यय-भाव (बारहवाँ) में छिपे हैं।**

इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि आप प्रेम करते हैं — गहरे से — पर वह प्रेम बाहर से दिखता कम है। जीवनसाथी को कभी-कभी यह संशय हो सकता है कि "क्या मुझे वाकई महत्व दिया जाता है?" मंगल की दृष्टि बारहवें भाव पर है, जो इस तनाव को और तीखा कर सकती है — छोटी-छोटी बात पर असहमति या आवेश आ सकता है।

समाधान: प्रेम को कार्य में दिखाइए — शब्दों से नहीं तो काम से। जीवनसाथी की कोई एक छोटी इच्छा याद रखना और उसे बिना कहे

पूरा करना — यही शुक्र को जगाने का रास्ता है। शुक्र के अनुसार घर में सौंदर्य और सुव्यवस्था बनाए रखना भी रिश्ते का सहारा बनता है।

पंचम भाव में राहु — अपेक्षाएँ बड़ी, वास्तविकता अलग

पाँचवाँ भाव प्रेम और भावनात्मक जुड़ाव का भी घर है। यहाँ राहु वक्री बैठे हैं, और सूर्य की दृष्टि भी इस पर पड़ रही है। **राहु का स्वभाव है — आदर्श का पीछा करना।** रिश्ते में जब असली साथी आदर्श से थोड़ा भी अलग दिखे, तो भीतर एक अजीब खालीपन आ सकता है।

केतु की दृष्टि भी पंचम पर है (भाव 11 से), जो इस भाव को और अधिक अनिश्चित बनाती है — कभी बहुत गहरा जुड़ाव, कभी अचानक भावनात्मक दूरी।

समाधान: रिश्ते में "पूर्ण" की तलाश छोड़िए — "अपना" ढूँढिए। जो साथी है, उसकी एक खूबी रोज़ मन-ही-मन स्वीकार करने का अभ्यास कीजिए। केतु की दशा में ध्यान और मौन बहुत सहायक होते हैं — जो भीतर का शोर है, वह बाहर रिश्ते पर मत निकालिए।

मुख्य बातें

- **भावनाएँ व्यक्त न करना** सबसे बड़ी चुनौती है — शनि वक्री व नीच चंद्र दोनों इसे बनाते हैं।
- **शुक्र का अस्त होना** प्रेम को छिपाता है — जीवनसाथी को दिखाना होगा, मान लेने से काम नहीं चलेगा।
- **राहु का आदर्शवाद** रिश्ते में निराशा दे सकता है — वास्तविकता को स्वीकारना ही स्थायित्व का रास्ता है।
- **फ़रवरी 2027 से** बुध की अंतर्दशा आरंभ होगी — तब संवाद सहज होगा और इन चुनौतियों का बड़ा हिस्सा स्वतः हल्का होगा।
- इन सबका समाधान बड़े उपाय नहीं, **छोटी-छोटी आदतें** हैं — रोज़, बिना नागा।



सुखी दाम्पत्य हेतु उपाय

अ ध्या य 7

सुखी दाम्पत्य हेतु उपाय

आपकी कुंडली में **शनि सप्तमेश हैं, शुक्र अस्त हैं, और मंगल दोष विद्यमान है** — इन तीनों को साधना ही सुखी दाम्पत्य की असली कुंजी है। उपाय कोई जादू नहीं, वे उन ग्रहों के साथ चलने का तरीका हैं जो आपके रिश्ते को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं।

शनि के साथ चलें — समय की पाबंदी व धैर्य

सप्तमेश शनि भाव 6 में स्वराशि में हैं — बलवान, पर कठोर। शनि का स्वभाव है देर और अनुशासन। रिश्ते में यही सबसे बड़ी चुनौती आती है — **आप या आपके साथी में से कोई एक बात को मन में दबा लेता है, कहता नहीं।** शनि के साथ चलने का सबसे बड़ा उपाय है:

- **जो मन में हो, वह उसी दिन कह दें** — अगले दिन पर मत छोड़ें। शनि की चुप्पी रिश्ते में दूरी बनाती है।
- हर सप्ताह एक तय समय निकालें — केवल जीवनसाथी के साथ, बिना फ़ोन के। यह शनि की पाबंदी को रिश्ते में उतारना है।
- शनि का मंत्र — **"ॐ शं शनैश्चराय नमः"** — शनिवार को 108 बार, शांत मन से। यह दाम्पत्य में धैर्य और समझ बढ़ाता है।

शुक्र को जगाएँ — प्रेम को व्यक्त करें

आपकी कुंडली में **शुक्र भाव 12 में अस्त हैं** — यानी प्रेम भीतर है, पर प्रकट करना कठिन लगता है। अस्त शुक्र का सबसे सरल उपाय है — **प्रेम को कर्म में दिखाएँ:**

- घर में कोई एक सुंदर काम रोज़ करें — फूल रखना, साथ बैठकर खाना खाना, जीवनसाथी की पसंद याद रखना।
- **शुक्रवार को सफ़ेद मिठाई** (खीर, रबड़ी) जीवनसाथी को स्वयं दें — यह शुक्र को जगाने का सबसे सरल और घरेलू तरीका है।
- शुक्र का रत्न हीरा इस कुंडली में **मना** है। उसकी जगह **सफ़ेद वस्त्र या सफ़ेद फूल** रखना घर में शुक्र को अनुकूल बनाता है।

मंगल की ऊर्जा को दिशा दें — झगड़े को मेहनत में बदलें

मंगल दोष है — मंगल भाव 9 में स्वराशि में, पर मृत अवस्था में। **क्रोध आएगा, पर उसे रिश्ते पर मत उतारें।** मंगल के साथ चलने का सबसे पक्का उपाय:

- **रोज़ सुबह 20-30 मिनट शारीरिक श्रम** — दौड़, योग, या तेज़ चाल। जिस दिन शरीर नहीं थकता, मंगल चिड़चिड़ाहट बनकर रिश्ते में निकलता है।
- मंगलवार को **लाल मसूर दाल का दान** किसी ज़रूरतमंद को दें।

मुख्य बातें

- **शनि मंत्र** शनिवार को 108 बार — धैर्य व संवाद के लिए।
 - **प्रेम को कर्म में दिखाएँ** — शुक्रवार को जीवनसाथी के लिए कुछ मीठा, कुछ सुंदर।
 - **रोज़ व्यायाम** — मंगल की ऊर्जा को रिश्ते से बाहर निकालें।
 - **हर बात उसी दिन कहें** — शनि की चुप्पी रिश्ते की सबसे बड़ी दुश्मन है।
 - **माणिक** (जीवन-रत्न व अभी का रत्न) धारण कर सकते हैं — यह लग्न को बल देता है और रिश्ते में आत्मविश्वास बढ़ाता है।
- koustubhgems.com पर प्रमाणित माणिक उपलब्ध है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ विवाह एवं दाम्पत्य रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।